कंपनी निर्माण

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कंपनी निर्माण का परिचय और चरण

प्रश्न 1 (आसान). कंपनी निर्माण का पहला चरण क्या है?
उत्तर – प्रवर्तन

प्रश्न 2 (आसान). वह व्यक्ति जो कंपनी बनाने की पहल करता है, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – प्रवर्तक

प्रश्न 3 (मध्यम). समामेलन प्रमाण पत्र मिलने के बाद कौन सी कंपनी तुरंत व्यापार शुरू कर सकती है और कौन सी नहीं?
उत्तर – एक निजी कंपनी समामेलन प्रमाण पत्र मिलते ही व्यापार शुरू कर सकती है, जबकि एक सार्वजनिक कंपनी को पूंजी का अभिदान और व्यापार प्रारंभ प्रमाण पत्र भी प्राप्त करना होता है।

प्रश्न 4 (कठिन). आप अपनी कंपनी के लिए नाम चुनते समय किन मुख्य बातों का ध्यान रखेंगे ताकि रजिस्ट्रार उसे अस्वीकृत न करे?
उत्तर – कंपनी का नाम ऐसा होना चाहिए जो किसी अन्य मौजूदा कंपनी के नाम से मिलता-जुलता न हो, और न ही वह भ्रामक (misleading) हो जिससे लोगों को लगे कि कंपनी किसी और व्यवसाय में है जबकि वह न हो। नाम के अनुमोदन के लिए रजिस्ट्रार को कम से कम तीन प्राथमिकता वाले नाम देने चाहिए।

» कंपनी प्रवर्तन: अवधारणा और प्रवर्तक के कार्य

प्रश्न 5 (आसान). जो व्यक्ति कंपनी को अस्तित्व में लाने की पहल करता है, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – प्रवर्तक

प्रश्न 6 (आसान). कंपनी निर्माण का पहला चरण कौन-सा है?
उत्तर – प्रवर्तन

प्रश्न 7 (मध्यम). प्रवर्तक के कोई तीन मुख्य कार्य बताइए.
उत्तर – व्यवसाय अवसर पहचानना, संभाव्यता अध्ययन करना, नाम का अनुमोदन लेना.

प्रश्न 8 (कठिन). तकनीकी संभाव्यता अध्ययन में किस बात पर ध्यान दिया जाता है? एक उदाहरण दें.
उत्तर – यह देखा जाता है कि क्या कोई विचार तकनीकी रूप से लागू किया जा सकता है. जैसे, आवश्यक कच्चा माल या तकनीक उपलब्ध है या नहीं. अगर किसी खास धातु की ज़रूरत है और वह देश में मिलती ही नहीं, तो परियोजना तकनीकी रूप से अव्यावहारिक हो जाएगी.

» संभाव्यता का अध्ययन

प्रश्न 9 (आसान). प्रवर्तक को कोई नया व्यवसाय शुरू करने से पहले किस तरह का अध्ययन करना चाहिए?
उत्तर – संभाव्यता का अध्ययन

प्रश्न 10 (आसान). अगर किसी प्रोजेक्ट के लिए आवश्यक मशीनरी नहीं मिल रही है, तो यह किस प्रकार की संभाव्यता से संबंधित समस्या है?
उत्तर – तकनीकी संभाव्यता

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर एक नया रेस्टोरेंट खोलने में इतना खर्च आ रहा है कि प्रवर्तक उसे जुटा नहीं सकता, तो यह किस प्रकार की संभाव्यता की समस्या है और इसका क्या परिणाम होगा?

उत्तर – यह वित्तीय संभाव्यता (Financial Feasibility) की समस्या है, और ऐसी स्थिति में परियोजना को त्यागना पड़ सकता है क्योंकि 'परियोजना पर होने वाला व्यय इतना अधिक है कि इसे उपलब्ध साधनों से सरलता से नहीं जुटाया जा सकता'.

प्रश्न 12 (कठिन). एक प्रवर्तक एक नई तरह की साइकिल बनाना चाहता है जो बिजली से चलती है. उसे तीनों प्रकार के संभाव्यता अध्ययनों में क्या-क्या देखना होगा?

उत्तर – तकनीकी संभाव्यता में वह देखेगा कि क्या आवश्यक पुर्ज़े (जैसे बैटरी, मोटर) आसानी से उपलब्ध हैं और क्या उन्हें जोड़ने के लिए कुशल कारीगर हैं. वित्तीय संभाव्यता में वह साइकिल बनाने की कुल लागत, कर्मचारियों की तनख्वाह, और मार्केटिंग के खर्च का अनुमान लगाएगा. आर्थिक संभाव्यता में वह देखेगा कि क्या लोग इतनी महंगी साइकिल खरीदने को तैयार होंगे और क्या बाज़ार में पहले से ऐसी कोई साइकिल मौजूद है जो प्रतिस्पर्धा पैदा कर सकती है.

» प्रवर्तकों द्वारा नाम का अनुमोदन और अन्य प्रारंभिक नियुक्तियाँ

प्रश्न 13 (आसान). प्रवर्तकों को 'कंपनी रजिस्ट्रार' को नाम के अनुमोदन के लिए कम से कम कितने नाम प्रस्तावित करने चाहिए?

उत्तर – तीन नाम

प्रश्न 14 (आसान). 'संस्थापन प्रलेख के हस्ताक्षरकर्ता' आमतौर पर कंपनी के पहले क्या होते हैं?

उत्तर – निदेशक

प्रश्न 15 (मध्यम). यदि कंपनी का प्रस्तावित नाम 'भ्रामक' (misleading) हो, तो 'कंपनी रजिस्ट्रार' क्या कदम उठाएगा?

उत्तर – वह उस नाम को अस्वीकार कर देगा और प्रवर्तकों द्वारा सुझाए गए वैकल्पिक नामों में से किसी और को मंजूरी देगा।

प्रश्न 16 (कठिन). प्रवर्तक 'मर्केंटाइल बैंकर्स' और 'ऑडिटर्स' जैसे 'पेशेवर लोगों' की नियुक्ति क्यों करते हैं?

उत्तर – प्रवर्तक इनकी नियुक्ति 'कंपनी के कानूनी कागजात' तैयार करने, 'वित्तीय मामलों' को संभालने और 'कंपनी रजिस्ट्रार' के पास जमा किए जाने वाले 'आवश्यक दस्तावेजों' को बनाने में सहायता प्राप्त करने के लिए करते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि सभी प्रक्रियाएं सही और कानूनी रूप से हों।

» कंपनी के आवश्यक दस्तावेज: संस्थापन प्रलेख (पार्षद सीमा नियम)

प्रश्न 17 (आसान). संस्थापन प्रलेख को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?

उत्तर – Memorandum of Association

प्रश्न 18 (आसान). कंपनी का कौन सा दस्तावेज़ उसके 'संविधान' जैसा होता है?

उत्तर – संस्थापन प्रलेख

प्रश्न 19 (मध्यम). संस्थापन प्रलेख में 'उद्देश्य खंड' क्यों सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है?

उत्तर – क्योंकि यह कंपनी के मुख्य उद्देश्यों को परिभाषित करता है और कंपनी इससे बाहर कोई कार्य नहीं कर सकती।

प्रश्न 20 (कठिन). यदि कोई कंपनी अपने 'संस्थापन प्रलेख' के 'उद्देश्य खंड' से बाहर जाकर कोई व्यापार करती है तो उस कार्य का क्या परिणाम होगा?

उत्तर – वह कार्य 'अल्ट्रा वायर्स' (Ultra Vires) या कंपनी के अधिकार क्षेत्र से बाहर माना जाएगा और कानूनन अवैध होगा, जिससे कंपनी पर कानूनी कार्यवाही हो सकती है।

» कंपनी के आवश्यक दस्तावेज: पार्षद अंतर्नियम

प्रश्न 21 (आसान). 'पार्षद अंतर्नियम' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – कंपनी के आंतरिक प्रबंधन के नियम बनाना।

प्रश्न 22 (आसान). क्या 'पार्षद अंतर्नियम' 'संस्थापन प्रलेख' के नियमों के खिलाफ हो सकते हैं?
उत्तर – नहीं, वे उसके सहायक होते हैं और खिलाफ नहीं हो सकते।

प्रश्न 23 (मध्यम). कंपनी के 'निदेशकों' की 'नियुक्ति' और उनके 'अधिकार' किस दस्तावेज़ में लिखे होते हैं?
उत्तर – पार्षद अंतर्नियम (Articles of Association) में।

प्रश्न 24 (कठिन). अगर 'संस्थापन प्रलेख' और 'पार्षद अंतर्नियम' के किसी नियम में विरोधाभास हो, तो किस नियम को वरीयता मिलेगी और क्यों?
उत्तर – 'संस्थापन प्रलेख' (Memorandum of Association) के नियम को वरीयता मिलेगी, क्योंकि यह कंपनी का प्राथमिक और सर्वोच्च दस्तावेज है, और 'पार्षद अंतर्नियम' हमेशा इसके अधीन काम करता है।

» अन्य आवश्यक प्रलेख और प्रवर्तकों की स्थिति

प्रश्न 25 (आसान). कंपनी निर्माण में 'प्रस्तावित निदेशकों की सहमति' से क्या मतलब है?
उत्तर – प्रस्तावित निदेशकों का लिखित में यह देना कि वे कंपनी के निदेशक बनने के लिए तैयार हैं।

प्रश्न 26 (आसान). प्रवर्तकों को कंपनी बनाने के दौरान कौन सा लाभ छिपाना नहीं चाहिए?
उत्तर – कोई भी 'गुप्त लाभ' जो उन्होंने कंपनी के बनने से पहले या दौरान कमाया हो।

प्रश्न 27 (मध्यम). कंपनी रजिस्ट्रार के पास जमा किए जाने वाले 'अन्य आवश्यक प्रलेखों' में फीस भुगतान की रसीद क्यों ज़रूरी है?
उत्तर – यह इस बात का प्रमाण है कि कंपनी के पंजीकरण के लिए सभी ज़रूरी सरकारी शुल्क जमा कर दिए गए हैं।

प्रश्न 28 (कठिन). प्रवर्तकों की स्थिति को 'एजेंट' या 'ट्रस्टी' क्यों नहीं कहा जाता, बल्कि 'न्यासी' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – प्रवर्तक एजेंट नहीं होते क्योंकि कंपनी का अभी जन्म नहीं हुआ होता। वे ट्रस्टी भी नहीं होते क्योंकि कंपनी अभी अस्तित्व में नहीं आई है। उनकी स्थिति एक 'न्यासी' की होती है, जिसमें उन्हें कंपनी के प्रति ईमानदारी और विश्वास से काम करना होता है और कोई भी गुप्त लाभ नहीं कमाना होता है।

» समामेलन प्रक्रिया और प्रमाण पत्र का प्रभाव

प्रश्न 29 (आसान). समामेलन प्रमाण पत्र कौन जारी करता है?
उत्तर – कंपनी रजिस्ट्रार

प्रश्न 30 (आसान). समामेलन प्रमाण पत्र मिलने के बाद कंपनी को क्या दर्जा मिलता है?
उत्तर – निगमित निकाय (Incorporated Body)

प्रश्न 31 (मध्यम). समामेलन प्रमाण पत्र कंपनी के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – यह कंपनी के कानूनी अस्तित्व का निर्णायक प्रमाण होता है और उसे एक पृथक कानूनी पहचान देता है।

प्रश्न 32 (कठिन). अगर समामेलन प्रक्रिया के आवेदन में कोई गलती रह गई हो, तो क्या समामेलन प्रमाण पत्र को रद्द किया जा सकता है?
उत्तर – नहीं, एक बार समामेलन प्रमाण पत्र जारी हो जाने के बाद, इसे कंपनी के अस्तित्व का निर्णायक प्रमाण माना जाता है और इसे दोषपूर्ण पंजीकरण के आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकती।

» एक व्यक्ति कंपनी (OPC)

प्रश्न 33 (आसान). एक व्यक्ति कंपनी (OPC) में कम से कम कितने सदस्य होते हैं?
उत्तर – एक

प्रश्न 34 (आसान). OPC किस अधिनियम के तहत शुरू की गई थी?
उत्तर – कंपनी अधिनियम, 2013

प्रश्न 35 (मध्यम). क्या एक नाबालिग (minor) व्यक्ति OPC का सदस्य या नामांकित (nominee) हो सकता है?
उत्तर – नहीं, कोई भी नाबालिग OPC का सदस्य या नामांकित नहीं हो सकता।

प्रश्न 36 (कठिन). एक 'निवासी' (resident) भारतीय कौन कहलाता है, OPC के संदर्भ में?
उत्तर – वह व्यक्ति जो पिछले कैलेंडर वर्ष में कम से कम 182 दिन भारत में रहा हो।

» पूँजी अभिदान: सार्वजनिक कंपनी के लिए

प्रश्न 37 (आसान). पूँजी अभिदान की प्रक्रिया किस प्रकार की कंपनी के लिए ज़रूरी है?
उत्तर – सार्वजनिक कंपनी

प्रश्न 38 (आसान). विवरण पत्रिका (prospectus) कौन जारी करता है?
उत्तर – सार्वजनिक कंपनी

प्रश्न 39 (मध्यम). SEBI का पूरा नाम क्या है और इसका क्या काम है पूँजी अभिदान में?
उत्तर – SEBI का पूरा नाम Securities and Exchange Board of India है। इसका काम जनता के हितों की रक्षा करना और पूँजी अभिदान प्रक्रिया को नियमों के अनुसार सुनिश्चित करना है।

प्रश्न 40 (कठिन). 'न्यूनतम अभिदान' (minimum subscription) का क्या अर्थ है और यह क्यों महत्वपूर्ण है?
उत्तर – न्यूनतम अभिदान का अर्थ है कि कंपनी को कम से कम 90% शेयरों के लिए आवेदन मिलने चाहिए। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सुनिश्चित करता है कि कंपनी के पास व्यापार शुरू करने के लिए पर्याप्त पूँजी हो, अन्यथा निवेशकों को उनका पैसा वापस कर दिया जाता है।

» अंशों का आवंटन और निदेशक पहचान संख्या (DIN)

प्रश्न 41 (आसान). अंशों के आवंटन के बाद, कंपनी को 'आवंटन विवरणी' कितने दिनों के भीतर रजिस्ट्रार को जमा करानी होती है?
उत्तर – 30 दिन

प्रश्न 42 (आसान). DIN का पूरा नाम क्या है?
उत्तर – निदेशक पहचान संख्या (Director Identification Number)

प्रश्न 43 (मध्यम). यदि कंपनी ने 2,00,000 शेयर जारी किए और 2,50,000 के आवेदन मिले, तो अधिशेष आवेदन राशि का क्या किया जाता है?
उत्तर – यह राशि या तो आवेदकों को लौटा दी जाती है या देय आवंटन राशि में उसका समायोजन कर दिया जाता है।

प्रश्न 44 (कठिन). एक निदेशक के लिए 'निदेशक पहचान संख्या' (DIN) क्यों महत्वपूर्ण है? क्या इसके बिना कोई निदेशक बन सकता है?
उत्तर – DIN इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रत्येक निदेशक को एक विशिष्ट पहचान संख्या देता है, जिससे उसकी पहचान और रिकॉर्ड्स ट्रैक किए जा सकें। 'किसी भी कंपनी में निदेशक के रूप में नियुक्त होने के लिए आवश्यक' है, इसलिए इसके बिना कोई निदेशक नहीं बन सकता।

» संस्थापन प्रलेख और अंतर्नियम में अंतर

प्रश्न 45 (आसान). संस्थापन प्रलेख का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – कंपनी के मुख्य उद्देश्यों को परिभाषित करना।

प्रश्न 46 (आसान). अंतर्नियम कौन से संबंधों को परिभाषित करते हैं?
उत्तर – कंपनी तथा उसके सदस्यों के बीच आंतरिक संबंधों को।

प्रश्न 47 (मध्यम). क्या हर कंपनी के लिए अंतर्नियम जमा कराना अनिवार्य है? यदि नहीं, तो विकल्प क्या है?
उत्तर – नहीं, अनिवार्य नहीं है। कंपनी अधिनियम 2013 की सारणी 'एफ' (Table F) को अपनाया जा सकता है।

प्रश्न 48 (कठिन). अगर कोई कंपनी संस्थापन प्रलेख के बाहर कोई कार्य करती है, तो उसका क्या परिणाम होता है, और क्या उसे सुधारा जा सकता है?
उत्तर – संस्थापन प्रलेख के क्षेत्र के बाहर के कार्य 'अमान्य' होते हैं और उन्हें सभी सदस्यों के एक मत से भी 'अनुमोदित नहीं किया जा सकता', क्योंकि यह कंपनी के अस्तित्व के मूल उद्देश्य के खिलाफ होता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए एक व्यक्ति, अविनाश, एक नया सोलर पैनल बनाने का बिज़नेस शुरू करना चाहता है, जिसके लिए उसे बहुत ज़्यादा पैसे और टेक्नोलॉजी की ज़रूरत है। इस बिज़नेस को कंपनी के रूप में स्थापित करने के मुख्य चरण क्या होंगे?

› पहला चरण है 'प्रवर्तन' (Promotion): अविनाश सबसे पहले बिज़नेस के अवसर की पहचान करेगा, जैसे सोलर पैनल की डिमांड, और फिर देखेगा कि क्या यह बिज़नेस सही में संभव है (संभाव्यता अध्ययन - feasibility study)। उसे यह भी तय करना होगा कि कंपनी का नाम क्या होगा और कौन-कौन लोग शुरुआत में साथ जुड़ेंगे।

› दूसरा चरण है 'समामेलन' (Incorporation): जब सारी शुरुआती तैयारी हो जाएगी, तो अविनाश और उसके साथी कंपनी रजिस्ट्रार के पास सारे ज़रूरी कागजात (जैसे मेमोरेंडम ऑफ़ एसोसिएशन और आर्टिकल्स ऑफ़ एसोसिएशन) जमा करेंगे। रजिस्ट्रार सब कुछ चेक करेगा और संतुष्ट होने पर 'समामेलन प्रमाण पत्र' जारी करेगा। यह प्रमाण पत्र मिलने पर कंपनी का कानूनी अस्तित्व हो जाता है।

› तीसरा चरण है 'पूंजी का अभिदान' (Capital Subscription): समामेलन के बाद, अगर यह एक पब्लिक कंपनी है, तो उसे आम जनता से पैसे जुटाने के लिए शेयर और डिबेंचर जारी करने होंगे। इसके लिए प्रॉस्पेक्टस (Prospectus) जारी किया जाता है और लोग शेयर खरीदने के लिए आवेदन करते हैं। जब पर्याप्त पूंजी जमा हो जाती है, तो कंपनी 'व्यापार प्रारंभ प्रमाण पत्र' प्राप्त करके अपना काम शुरू कर सकती है।

› निजी कंपनी: ध्यान रखना, अगर अविनाश एक निजी कंपनी बनाता है, तो वह 'समामेलन प्रमाण पत्र' मिलते ही व्यापार शुरू कर सकती है, उसे 'पूंजी का अभिदान' और 'व्यापार प्रारंभ प्रमाण पत्र' की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि वह जनता से सीधे पैसे नहीं जुटाती।

उत्तर – इस सोलर पैनल बिज़नेस को कंपनी के रूप में स्थापित करने के लिए मुख्य चरण प्रवर्तन, समामेलन और पूंजी का अभिदान होंगे।

उदाहरण 2. एक नया बिज़नेस है, 'शुभ डेयरी प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड'. इसका आइडिया आया कि शहरों में ताज़े और शुद्ध दूध के प्रोडक्ट्स की सप्लाई की जाए. अब बताओ, प्रवर्तक के तौर पर सबसे पहले कौन-कौन से काम किए जाएंगे?

› पहला काम होगा 'व्यवसाय के अवसर की पहचान' (Identification of business opportunity). यहां अवसर है शहरी लोगों को शुद्ध दूध प्रोडक्ट्स देना.

› दूसरा काम 'संभाव्यता का अध्ययन' (Feasibility studies) करना. इसमें देखेंगे कि क्या शुद्ध दूध गांव से शहर लाना 'तकनीकी रूप से संभव' (technically feasible) है? क्या इसमें 'पैसे लगाना फायदेमंद' (financially viable) होगा? और क्या बाजार में इसकी 'मांग है और लाभ मिलेगा' (economically profitable)?

› तीसरा, कंपनी का 'नाम का अनुमोदन' (Name approval) लेना. जैसे, 'शुभ डेयरी प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड' नाम को कंपनी रजिस्ट्रार से मंज़ूरी दिलाना.

› चौथा, 'संस्थापन प्रलेख के हस्ताक्षरकर्ताओं को निश्चित करना' (Fixing up signatories to the Memorandum of Association). ये तय करना कि मेमोरेंडम पर कौन लोग साइन करेंगे, जो कंपनी के पहले डायरेक्टर बनेंगे.

› पांचवां, 'कुछ पेशेवर लोगों की नियुक्ति' (Appointment of professionals) करना. कंपनी के दस्तावेज़ बनाने के लिए वकील, अकाउंटेंट, बैंकर्स जैसे लोगों को हायर करना.

› और छठा, 'आवश्यक प्रलेखों को तैयार करना' (Preparation of necessary documents) जैसे 'संस्थापन प्रलेख' (Memorandum of Association) और 'पार्षद अंतर्नियम' (Articles of Association).

› यह सारे काम एक के बाद एक किए जाएंगे ताकि 'शुभ डेयरी' ज़मीन पर उतर सके.

उत्तर – प्रवर्तक के तौर पर, सबसे पहले व्यवसाय अवसर की पहचान की जाएगी, फिर उसकी तकनीकी, वित्तीय और आर्थिक संभाव्यता का अध्ययन होगा, उसके बाद कंपनी के नाम का अनुमोदन लिया जाएगा, संस्थापन प्रलेख के हस्ताक्षरकर्ता निश्चित होंगे, पेशेवर लोगों की नियुक्ति होगी और आखिर में ज़रूरी कानूनी प्रलेख तैयार किए जाएंगे.

उदाहरण 3. एक प्रवर्तक एक नया ऐप बनाना चाहता है जो बच्चों को गणित सीखने में मदद करेगा. उसे किन तीन प्रकार के संभाव्यता अध्ययनों की जांच करनी होगी?

› पहला अध्ययन होगा 'तकनीकी संभाव्यता' (Technical Feasibility). इसमें हम देखेंगे कि क्या 'आवश्यक कच्चा माल अथवा तकनीक सरलता से उपलब्ध नहीं होता है' – मतलब, क्या हमारे पास ऐप बनाने के लिए सही सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं? क्या ज़रूरी टेक्नोलॉजी मौजूद है? अगर नहीं, तो यह तकनीकी रूप से संभव नहीं होगा.

› दूसरा अध्ययन है 'वित्तीय संभाव्यता' (Financial Feasibility). यहाँ हम अनुमान लगाएंगे कि ऐप बनाने में कितना खर्चा आएगा. 'यदि परियोजना पर होने वाला व्यय इतना अधिक है कि इसे उपलब्ध साधनों से सरलता से नहीं जुटाया जा सकता तो परियोजना को त्यागना होगा.' क्या हमारे पास ऐप बनाने और उसे लॉन्च करने के लिए पर्याप्त पैसा है? अगर लागत बहुत ज़्यादा है और हम उसे जुटा नहीं सकते, तो ये विचार त्यागना पड़ेगा.

› तीसरा और अंतिम अध्ययन है 'आर्थिक संभाव्यता' (Economic Feasibility). यहाँ हम देखेंगे कि 'इसकी लाभप्रदता की संभावना बहुत कम हैं' – मतलब, क्या यह ऐप सच में बच्चों को पसंद आएगा? क्या माता-पिता इसके लिए पैसे देंगे? क्या इससे हमें पर्याप्त मुनाफा होगा? अगर बाज़ार में पहले से ही ऐसे बहुत सारे ऐप हैं या लोग इस पर पैसा खर्च करने को तैयार नहीं हैं, तो यह आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं होगा.

उत्तर – प्रवर्तक को तकनीकी, वित्तीय और आर्थिक संभाव्यता अध्ययनों की जांच करनी होगी.

उदाहरण 4. मान लीजिए आप एक नई टेक्नोलॉजी कंपनी शुरू करना चाहते हैं। इसके लिए 'कंपनी प्रवर्तन' के चरण में, 'नाम के अनुमोदन' और 'प्रारंभिक नियुक्तियों' के संदर्भ में आप क्या कदम उठाएंगे?

› स्टेप 1: कंपनी के लिए तीन संभावित नामों का चयन करें। जैसे, 'टेक विजन', 'फ्यूचर टेक सॉल्यूशंस', 'इनोवेटिव डिजिटल इंक'।

› स्टेप 2: इन नामों को प्राथमिकता क्रम में रखते हुए, राज्य के 'कंपनी रजिस्ट्रार' के पास फॉर्म INC-1 भरकर 'नाम अनुमोदन' के लिए आवेदन करें।

› स्टेप 3: रजिस्ट्रार द्वारा सुझाए गए पहले उपलब्ध नाम, मान लीजिए 'फ्यूचर टेक सॉल्यूशंस', को स्वीकृति मिलने का इंतजार करें।

› स्टेप 4: 'संस्थापन प्रलेख' (Memorandum of Association) पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों को निश्चित करें। ये आमतौर पर कंपनी के 'पहले निदेशक' होंगे। उनसे 'कंपनी के योग्यता अंश खरीदने' और 'निदेशक के रूप में कार्य करने' की लिखित सहमति लें।

› स्टेप 5: कंपनी के दस्तावेज़ीकरण और कानूनी प्रक्रिया में सहायता के लिए 'पेशेवर लोगों' जैसे 'कंपनी सेक्रेटरी', 'चार्टर्ड अकाउंटेंट' (Auditors) और 'मर्केंटाइल बैंकर्स' की नियुक्ति करें।

उत्तर – इस प्रक्रिया के बाद, आपकी कंपनी को 'फ्यूचर टेक सॉल्यूशंस' नाम मिलेगा, और उसके प्रारंभिक निदेशक व पेशेवर सहायक भी तय हो जाएंगे, जो कंपनी के अगले चरणों को आगे बढ़ाएंगे।

उदाहरण 5. मान लीजिए एक नई कंपनी 'राम उद्योग लिमिटेड' बनाई जा रही है। संस्थापन प्रलेख के मुख्य खंडों में क्या-क्या जानकारी शामिल होगी?

› पहला खंड होगा 'नाम खंड' (Name Clause): इसमें कंपनी का पूरा नाम लिखा जाएगा, जैसे 'राम उद्योग लिमिटेड'।

› दूसरा खंड है 'पंजीकृत कार्यालय खंड' (Registered Office Clause): इसमें उस राज्य का नाम होगा जहाँ कंपनी का पंजीकृत कार्यालय होगा, मान लीजिए 'उत्तर प्रदेश'।

› तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण खंड है 'उद्देश्य खंड' (Objects Clause): इसमें कंपनी के मुख्य व्यवसाय और उद्देश्य लिखे जाएंगे, जैसे 'कृषि उत्पादों का निर्माण और व्यापार करना' और 'संबंधिक गतिविधियों में शामिल होना'।

› चौथा खंड है 'दायित्व खंड' (Liability Clause): इसमें बताया जाएगा कि सदस्यों का दायित्व उनके द्वारा खरीदे गए

'शेयरों की अदत्त राशि' तक सीमित है।

› और पाँचवाँ खंड है 'पूंजी खंड' (Capital Clause): इसमें कंपनी की 'अधिकतम अधिकृत पूंजी' (authorised capital) लिखी जाएगी, मान लीजिए '50 लाख रुपये, जो 10 रुपये के 5 लाख शेयरों में बंटी है'।

उत्तर – इस प्रकार 'राम उद्योग लिमिटेड' का संस्थापन प्रलेख इन पांच मुख्य खंडों में कंपनी की आधारभूत जानकारी को स्पष्ट रूप से परिभाषित करेगा।

उदाहरण 6. मान लीजिए एक नई कंपनी 'शाइनिंग स्टार्स प्राइवेट लिमिटेड' बन रही है। हमें उसके 'पार्षद अंतर्नियम' में कुछ नियम बनाने हैं। कौन से नियम इसमें शामिल किए जाएंगे?

› पहला कदम यह होगा कि हम 'कंपनी अधिनियम 2013' की सारणी F, G, H, I, या J में से अपनी कंपनी के प्रकार के अनुसार एक उपयुक्त 'मॉडल' चुनेंगे। जैसे, अगर यह 'अंशों द्वारा सीमित कंपनी' है, तो हम 'सारणी F' देखेंगे।

› दूसरा कदम: हम इसमें तय करेंगे कि 'शेयर कैसे जारी किए जाएंगे' और उन्हें 'ट्रांसफर' कैसे किया जाएगा। क्या 'शेयरधारक' अपने 'शेयर' किसी को भी बेच सकते हैं या पहले कंपनी के दूसरे 'शेयरधारकों' को ही ऑफर करना होगा?

› तीसरा कदम: हम 'निदेशकों' की संख्या, उनकी 'नियुक्ति की प्रक्रिया', 'बैठकों' की संख्या और 'अधिकारों' का निर्धारण करेंगे। उदाहरण के लिए, क्या हर साल 'डायरेक्टर्स' चुने जाएंगे या उनका 'टर्म' फिक्स होगा?

› चौथा कदम: 'कंपनी की मीटिंग्स' – जैसे 'एनुअल जनरल मीटिंग (AGM)' कब और कैसे बुलाई जाएगी? 'कोरम' कितना होगा, यानी कम से कम कितने 'शेयरधारकों' का होना ज़रूरी है ताकि मीटिंग वैध मानी जाए?

› पांचवां कदम: 'लाभांश (dividend)' कैसे घोषित किया जाएगा और 'संचय (reserves)' का उपयोग कैसे होगा? ये सारे 'आंतरिक नियम' पार्षद अंतर्नियम में लिखे जाएंगे।

उत्तर – इस प्रकार, 'शाइनिंग स्टार्स प्राइवेट लिमिटेड' के 'पार्षद अंतर्नियम' में 'शेयर जारी करने और ट्रांसफर करने के नियम', 'निदेशकों की नियुक्ति और उनके अधिकार', 'मीटिंग्स' के नियम और 'वित्तीय प्रबंधन' से जुड़े 'आंतरिक नियम' शामिल किए जाएंगे।

उदाहरण 7. अगर एक कंपनी का प्रवर्तक, कंपनी बनने से पहले अपनी ही एक पुरानी ज़मीन कंपनी को ज़्यादा दाम पर बेच देता है और इस बात को छिपाता है, तो कंपनी क्या कार्रवाई कर सकती है?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि प्रवर्तक की स्थिति 'न्यासी' की होती है। 'He must not make any secret profit' – उसे कोई गुप्त लाभ नहीं कमाना चाहिए।

› अगर प्रवर्तक ने अपनी पुरानी ज़मीन ज़्यादा दाम पर बेची और यह बात कंपनी से छिपाई, तो यह 'गुप्त लाभ' कमाने जैसा है और 'breach of fiduciary duty' यानी न्यासी की जिम्मेदारी का उल्लंघन है।

› कंपनी इस 'प्रसंविदा' (contract) को 'रद्द' कर सकती है, यानी वह ज़मीन का सौदा कैंसिल कर सकती है।

› इतना ही नहीं, 'The company can recover the purchase price paid to the promoters' – कंपनी प्रवर्तक को जो ज़्यादा पैसा दिया गया था, उसे भी वापस ले सकती है।

उत्तर – कंपनी उस खरीद-बिक्री के समझौते को रद्द कर सकती है और प्रवर्तक को दिया गया अतिरिक्त पैसा वापस वसूल कर सकती है।

उदाहरण 8. एक नया व्यापार 'सूर्य प्राइवेट लिमिटेड' शुरू करना है। इसके लिए समामेलन प्रक्रिया कैसे पूरी होगी और प्रमाण पत्र मिलने के बाद इसका क्या कानूनी असर होगा?

› पहला कदम है 'आवेदन करना'। प्रवर्तक को कंपनी रजिस्ट्रार के पास निर्धारित फॉर्म में, जिसे 'Form INC-7' कहते हैं, सारे ज़रूरी दस्तावेज़ों के साथ आवेदन करना होगा। जैसे हमने पिछली क्लास में बात की थी ना, संस्थापन प्रलेख, अंतर्नियम, डायरेक्टर्स की सहमति, फीस की रसीद, ये सब जमा करने होंगे।

› दूसरा कदम, 'रजिस्ट्रार द्वारा जाँच'। रजिस्ट्रार इन सभी दस्तावेज़ों की अच्छे से जाँच करेंगे। वे देखेंगे कि सब कुछ नियम के हिसाब से है या नहीं, कोई जानकारी गलत तो नहीं है, या कोई कमी तो नहीं है।

› तीसरा और सबसे अहम कदम, 'समामेलन प्रमाण पत्र जारी करना'। अगर रजिस्ट्रार सब कुछ सही पाते हैं, तो वो 'समामेलन प्रमाण पत्र' जारी कर देते हैं। इसमें कंपनी का नाम, रजिस्ट्रेशन नंबर और समामेलन की तारीख लिखी होती है।

› इस प्रमाण पत्र का 'कानूनी प्रभाव' यह है कि 'सूर्य प्राइवेट लिमिटेड' उस तारीख से एक 'निगमित निकाय' बन जाएगी। इसका मतलब है कि अब वो कानून की नज़रों में एक 'अलग व्यक्ति' है, जैसे हम और आप। कंपनी अपने नाम से संपत्ति खरीद सकती है, बेच सकती है, कॉन्ट्रैक्ट कर सकती है और किसी पर मुकदमा भी कर सकती है, या उस पर मुकदमा हो

सकता है।

› सबसे महत्वपूर्ण बात, ये प्रमाण पत्र 'कंपनी के अस्तित्व का निर्णायक प्रमाण' है। भले ही आवेदन में कोई छोटी-मोटी गलती रह भी गई हो, लेकिन एक बार प्रमाण पत्र मिल गया, तो कंपनी कानूनी रूप से वैध मानी जाएगी। आप इसे चुनौती नहीं दे सकते।

› जैसे ही 'सूर्य प्राइवेट लिमिटेड' को ये प्रमाण पत्र मिला, वो अपना व्यापार शुरू कर सकती है।

उत्तर – 'सूर्य प्राइवेट लिमिटेड' को समामेलन प्रमाण पत्र मिलने के बाद, वह एक निगमित निकाय बन जाती है और उसका कानूनी अस्तित्व स्थापित हो जाता है, जिसे चुनौती नहीं दी जा सकती।

उदाहरण 9. श्याम, एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर, अपना खुद का सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट व्यवसाय शुरू करना चाहता है, लेकिन वह किसी और को पार्टनर नहीं बनाना चाहता। वह कंपनी के सभी कानूनी लाभ जैसे 'सीमित दायित्व' भी चाहता है। उसे क्या करना चाहिए?

› श्याम को 'एक व्यक्ति कंपनी' (OPC) के रूप में अपनी कंपनी बनाने पर विचार करना चाहिए, क्योंकि यह उसे 'a single member company' की अनुमति देता है।

› उसे कंपनी रजिस्ट्रार के पास सभी आवश्यक दस्तावेज जमा करने होंगे, जैसे 'Memorandum of Association' और 'Articles of Association', जिसमें उसका नाम और एक 'नामांकित व्यक्ति' (Nominee) का नाम शामिल होगा।

› नामांकित व्यक्ति वह होगा जो श्याम की मृत्यु या अक्षमता की स्थिति में कंपनी का सदस्य बन जाएगा।

› रजिस्ट्रार द्वारा सभी दस्तावेजों की जांच और अनुमोदन के बाद, श्याम को 'Certificate of Incorporation' मिलेगा, जिससे उसकी OPC को कानूनी मान्यता मिल जाएगी।

उत्तर – श्याम को 'एक व्यक्ति कंपनी' (OPC) बनानी चाहिए, जिससे वह अकेले ही कंपनी चला सके और 'सीमित दायित्व' जैसे सभी लाभ प्राप्त कर सके।

उदाहरण 10. एक नई सार्वजनिक कंपनी 'अभिषेक लिमिटेड' को ₹10 करोड़ की पूँजी चाहिए। इस पूँजी अभिदान की प्रक्रिया के मुख्य चरण क्या होंगे?

› पहला कदम है 'SEBI approval' लेना। इसका मतलब है 'Securities and Exchange Board of India' से अनुमति लेना, ताकि सुनिश्चित हो सके कि सब कुछ नियमों के अनुसार हो रहा है और जनता के साथ कोई धोखाधड़ी न हो।

› दूसरा, कंपनी को 'file a prospectus with the Registrar' करना होता है, यानी कंपनी रजिस्ट्रार के पास एक विवरण पत्रिका जमा करनी पड़ती है। इसमें कंपनी की पूरी जानकारी होती है - कंपनी क्या करती है, उसे कितने पैसे चाहिए, वो पैसे कहाँ खर्च होंगे, आदि।

› इसके बाद, कंपनी 'appoints bankers, brokers, and underwriters' - मतलब बैंकर्स, ब्रोकर्स और अंडरराइटर्स को नियुक्त करती है। बैंकर्स पैसा इकट्ठा करते हैं, ब्रोकर्स लोगों को शेयर खरीदने में मदद करते हैं, और अंडरराइटर्स गारंटी देते हैं कि अगर सारे शेयर नहीं बिके तो वे बचे हुए शेयर खरीद लेंगे।

› फिर, कंपनी 'issues the prospectus to the public' – यानी जनता के लिए 'विवरण पत्रिका' जारी करती है, अख़बारों और इंटरनेट के माध्यम से। लोग इसे पढ़कर फैसला करते हैं कि उन्हें शेयर खरीदने हैं या नहीं।

› लोग कंपनी के 'shares' खरीदने के लिए 'application forms' भरते हैं और पैसा जमा करते हैं। यहाँ एक नियम आता है 'minimum subscription', मतलब कंपनी को कम से कम 90% शेयरों के लिए आवेदन मिलने चाहिए। अगर 90% आवेदन नहीं मिलते, तो कंपनी को सारा पैसा वापस करना पड़ता है।

› अगर 'minimum subscription' पूरा हो जाता है, तो कंपनी 'allots the shares' - यानी लोगों को शेयर आवंटित करती है और उन्हें 'share certificates' मिलते हैं।

› आखिरी में, कंपनी 'applies to a stock exchange for listing' - मतलब कंपनी अपने शेयरों को शेयर बाजार में सूचीबद्ध करने के लिए आवेदन करती है, ताकि लोग उन शेयरों को खरीद या बेच सकें।

उत्तर – अभिषेक लिमिटेड को SEBI से अनुमोदन लेना होगा, विवरण पत्रिका जमा करनी होगी, बैंकर्स-ब्रोकर्स नियुक्त करने होंगे, जनता से आवेदन मंगवाने होंगे, न्यूनतम अभिदान की शर्त पूरी करनी होगी, शेयर आवंटित करने होंगे और अंत में स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध करवाना होगा।

उदाहरण 11. एक कंपनी ने 1,00,000 शेयर जारी किए। उन्हें 1,50,000 शेयरों के लिए आवेदन मिले। कंपनी ने समानुपातिक आधार पर आवंटन किया। यदि एक व्यक्ति ने 1,500 शेयरों के लिए आवेदन किया, तो उसे कितने शेयर आवंटित होंगे?

› पहला कदम, हम यह देखेंगे कि कंपनी ने कितने शेयर जारी किए और कितने के लिए आवेदन मिले। 'कंपनी ने 1,00,000 शेयर जारी किए' और '1,50,000 शेयरों के लिए आवेदन मिले'।

› दूसरा कदम, आवंटन का अनुपात निकालेंगे। कुल जारी शेयर / कुल आवेदन = 1,00,000 / 1,50,000 = 2/3 का अनुपात है।

› तीसरा कदम, अब जिसने 1,500 शेयरों के लिए आवेदन किया, उसे कितने शेयर मिलेंगे? 1,500 * (2/3) = 1,000 शेयर।

› तो, उसे 1,000 शेयर आवंटित होंगे और बाकी बचे 500 शेयरों के पैसे वापस कर दिए जाएंगे या समायोजित किए जाएंगे।

उत्तर – उस व्यक्ति को 1,000 शेयर आवंटित होंगे।

उदाहरण 12. कंपनी अधिनियम, 2013 के अनुसार, 'संस्थापन प्रलेख' (Memorandum of Association - MOA) और 'अंतर्नियम' (Articles of Association - AOA) के बीच के मुख्य अंतरों को समझाइए, विशेषकर उनके उद्देश्य और स्थिति के संदर्भ में।

› पहला अंतर है 'उद्देश्य' का। 'संस्थापन प्रलेख' यानी 'Memorandum of Association' कंपनी के 'मुख्य उद्देश्यों' को परिभाषित करता है। जैसे लिखा है – 'सीमा नियम कंपनी स्थापना के उद्देश्यों को परिभाषित करते हैं।' इसका मतलब है कि कंपनी किसलिए बनाई गई है, क्या काम करेगी, यह सब बाहर की दुनिया को बताने के लिए। यह एक तरह से कंपनी का विजन डॉक्यूमेंट है।

› वहीं, 'अंतर्नियम' यानी 'Articles of Association' कंपनी के 'आंतरिक प्रबंधन के नियम' होते हैं। किताब में लिखा है – 'अंतर्नियम कंपनी के आंतरिक प्रबंध के नियम होते है।' तो ये कंपनी के अंदर के सारे नियम-कानून बताते हैं कि रोज़मर्रा का काम कैसे चलेगा, निदेशकों की मीटिंग कैसे होगी, शेयर ट्रांसफर कैसे होंगे। ये सब कंपनी के अंदरूनी कामकाज के लिए होते हैं।

› दूसरा मुख्य अंतर है उनकी 'स्थिति' का। 'संस्थापन प्रलेख' कंपनी का 'मुख्य प्रलेख' है। यह 'कंपनी अधिनियम के अधीन' है। मतलब यह सबसे ऊपर है, कंपनी इसी से बंधी हुई है और कोई भी कंपनी इसके खिलाफ काम नहीं कर सकती।

› इसके विपरीत, 'अंतर्नियम' एक 'सहायक प्रलेख' है। यह 'सीमा नियम एवं कंपनी अधिनियम के दोनों के अधीन है।' मतलब यह 'संस्थापन प्रलेख' से नीचे है और कंपनी अधिनियम के भी नीचे है। अंतर्नियम में लिखा कोई भी नियम सीमा नियम या कंपनी अधिनियम के खिलाफ नहीं हो सकता।

› एक और बड़ा अंतर है 'संबंध' का। 'सीमा नियम कंपनी के बाहरी दुनिया से संबंध निश्चित करता है।' मतलब कंपनी बाहर के लोगों, जैसे ग्राहकों, सप्लायरों, सरकार के साथ कैसे व्यवहार करेगी, ये सब सीमा नियम से पता चलता है।

› जबकि 'अंतर्नियम कंपनी तथा उसके सदस्यों के बीच आंतरिक संबंधों को परिभाषित करता है।' ये कंपनी के अंदर के लोगों, जैसे शेयरधारकों, निदेशकों, कर्मचारियों के आपसी संबंध और अधिकार तय करते हैं।

उत्तर – संस्थापन प्रलेख कंपनी के बाहरी उद्देश्यों को परिभाषित करता है और यह कंपनी का मुख्य प्रलेख होता है, जो कंपनी के बाहरी दुनिया से संबंध निश्चित करता है। वहीं, अंतर्नियम कंपनी के आंतरिक प्रबंधन के नियम होते हैं और यह एक सहायक प्रलेख होता है, जो कंपनी तथा उसके सदस्यों के बीच आंतरिक संबंधों को परिभाषित करता है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• कंपनी निर्माण के तीनों चरणों के नाम और उनकी संक्षिप्त व्याख्या बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।

• प्रवर्तक के कार्य बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 से 5 अंक के प्रश्न के रूप में आते हैं, इसलिए इनके हर बिंदु को उदाहरण के साथ अच्छे से समझना और याद करना बहुत ज़रूरी है.

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है। 'नाम के अनुमोदन की प्रक्रिया' और 'विभिन्न प्रकार की प्रारंभिक नियुक्तियों' पर सीधा प्रश्न पूछा जा सकता है। नाम अस्वीकृति के कारणों को ध्यान से समझें।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी है! 'संस्थापन प्रलेख' के विभिन्न खंडों का वर्णन करने वाले प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं। हर खंड का नाम और उसका मतलब अच्छे से याद कर लेना।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर 'संस्थापन प्रलेख' और 'पार्षद अंतर्नियम' के बीच अंतर पूछा जाता है, इसलिए दोनों के मुख्य बिंदुओं को अच्छे से समझकर जाना।

• प्रवर्तकों की स्थिति से संबंधित प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछे जाते हैं, खासकर उनकी 'न्यासी' वाली भूमिका पर ध्यान दें।

• समामेलन प्रमाण पत्र के 'प्रभाव' और 'निर्णायक प्रमाण' वाले बिंदु को बोर्ड परीक्षा के लिए अच्छे से तैयार करें।

• एक व्यक्ति कंपनी की परिभाषा और उसकी मुख्य विशेषताओं पर विशेष ध्यान दें, यह बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'SEBI', 'विवरण पत्रिका' (prospectus), और 'न्यूनतम अभिदान' (minimum subscription) इन पर अक्सर सीधा प्रश्न आता है, इनकी परभिषाएँ और महत्व ज़रूर याद रखें।

• अंशों के आवंटन की प्रक्रिया और 'निदेशक पहचान संख्या' (DIN) की आवश्यकता पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, इसलिए इसके हर चरण को अच्छे से समझना और याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 से 5 अंकों के अंतर वाले प्रश्न के रूप में आता है। सभी मुख्य बिंदुओं जैसे उद्देश्य, स्थिति, संबंध और अनिवार्यता को अच्छे से याद करें।

एक नज़र में रिवीज़न

› कंपनी निर्माण के 3 चरण: प्रवर्तन, समामेलन, पूंजी का अभिदान।

› प्रवर्तन: व्यवसाय अवसर पहचानना, संभाव्यता अध्ययन, नाम अनुमोदन, प्रलेख तैयार करना.

› नाम अनुमोदन (3 नाम), MoA हस्ताक्षरकर्ता, पेशेवरों की नियुक्ति।

› संस्थापन प्रलेख: कंपनी का मुख्य दस्तावेज़, नाम, पता, उद्देश्य, दायित्व, पूंजी खंड।

› पार्षद अंतर्नियम: कंपनी के आंतरिक प्रबंधन के नियम; MoA के सहायक।

› अन्य प्रलेख आवश्यक (निदेशकों की सहमति, फीस), प्रवर्तक न्यासी (गुप्त लाभ वर्जित)।

› समामेलन प्रमाण पत्र = कंपनी का कानूनी जन्म और निर्णायक अस्तित्व।

› OPC: Company Act 2013, one member, limited liability, encourages small businesses.

› सार्वजनिक कंपनी द्वारा SEBI अनुमोदन से जनता से पूँजी जुटाने की प्रक्रिया।

› अंशों का आवंटन = आवेदकों को शेयर देना, 30 दिन में 'आवंटन विवरणी' जमा; DIN = निदेशक पहचान संख्या।

› संस्थापन प्रलेख: बाहरी उद्देश्य, मुख्य प्रलेख। अंतर्नियम: आंतरिक नियम, सहायक प्रलेख।